

जिस पे रहमत¹ से भरी एक नज़र हो जाए
दीन-ओ-दुनिया² से वो बेगानः बशर हो जाए

इतना तूफ़ान उठाओ न मेरे हम-सफ़रो
डर है कश्ती न कहीं ज़ेर-ओ-ज़बर³ हो जाए

शेर वो शेर जो आवाज़ हो ख़ामोशी की
बेजुबाँ बन के जो पैग़ामे-नज़र हो जाए

इम्तिहाँ है निगहे-शौक़⁴ की बेताबी का
हम तो ख़ामोश रहें उनको ख़बर हो जाए

महफ़िले-हल्का-ए-अरबाबे-जुनूं⁵ है 'दर्शन'
बैठ जाए जो यहाँ, एहले-नज़र⁶ हो जाए

¹दयादृष्टि ²लोक-परलोक ³उलट पुलट ⁴प्रेम भरी नज़र ⁵प्रेमोन्माद की स्थिति पर पहुंचे लोगों की सभा ⁶आँख खुल जायेगी

हंसी का राज़ क्या जानें, खुशी का राज़ क्या जानें
जो एहले-ग़म¹ नहीं वो ज़िन्दगी का राज़ क्या जानें

ग़मे-दौरां², बक़ैदे-होश³ झेले जा नहीं सकते
खिरद⁴ वाले हमारी बेखुदी⁵ का राज़ क्या जानें

किसी पर जान देना मक़सदे-हस्ती समझते हैं
न हमसे पूछिए, हम ज़िन्दगी का राज़ क्या जानें

पसंदे-खातिरे-रहमत⁶ है एहसासे-ख़ताकारी
जहां वाले मेरी शर्मिन्दगी का राज़ क्या जानें

नहीं है जिनके दिल में आदमी का दर्द ऐ 'दर्शन'
वो मेरी दर्द-आगी⁷ शायरी का राज़ क्या जानें

¹दिल पे चोट खाए लोग ²दुनिया के दुख ³होश में रहकर ⁴अक्ल ⁵विस्मृति ⁶दयानिधान प्रभु को ⁷दर्द देने वाली

रहे-इश्क की इन्तहा¹ चाहता हूं
जुनूं² सा कोई रहनुमा³ चाहता हूं

जो इरफ़ान⁴ की ज़िन्दगी को बढ़ा दे
मैं वो बादा-ए-जांफ़िज़ा⁵ चाहता हूं

मिटा कर मुझे आप में ज़ब्ब⁶ कर ले
बक्रा⁷ के लिए मैं फ़ना⁸ चाहता हूं

बयां हाले-दिल मैं करूं क्यों ज़बां से
खुदा जानता है मैं क्या चाहता हूं

मेरे चारागर⁹ मैं हूं बीमार तेरा
तेरे हाथ से ही शिफ़ा¹⁰ चाहता हूं

¹अंतिम छोर ²प्रेम जहां अपना आपा भूल जाये ³मार्गदर्शक ⁴अध्यात्म ⁵जान को उभारने वाली सुरा ⁶मिला ले ⁷हमेशा
⁸परमात्मा में मिल जाना ⁹चिकित्सक ¹⁰दवा

हसीं गुलों¹ में सितारों में रौशनी न मिली
मिले न तुम तो कहीं भी हमें खुशी न मिली

न चाँद में, न शफ़र² में, न लाला-ओ-गुल³ में
जो आप में है कहीं भी वो दिलकशी न मिली

हमीं को सौंप दिए कुल जहां के रंज-ओ-अलम⁴
किसी में और हमारी सी दिलदिही⁵ न मिली

गिला करेंगे न अब मेरे बाद के रहरौ⁶
कि उनको राहे-मुहब्बत में रौशनी न मिली

जो छेड़ती मेरे बेताब दिल के तारों को
किसी भी साज़⁷ में 'दर्शन' वो नगमगी⁸ न मिली

¹फूलों ²आसमान की लाली ³लाला और गुलाब के सुर्ख फूलों में ⁴शोक और दुख ⁵संवेदना ⁶पथिक ⁷यंत्र ⁸संगीत

बातें खुद अपने दिल से किए जा रहा हूं मैं
तनहाई¹ को फ़रेब² दिए जा रहा हूं मैं

अब उनका ग़म भी वजहे-तसल्ली नहीं रहा
ये ग़म भी अपने साथ लिए जा रहा हूं मैं

जिस रहगुज़र³ से गुज़रा है उनका ख़याल भी
उस रहगुज़र पे सज्दे किये जा रहा हूं मैं

बेख़ौफ़ गुज़रें राह से अब एहले कारवां⁴
कांटों को अपने साथ लिए जा रहा हूं मैं

'दर्शन' अब अपने पास है क्या जुज़ ग़मे-फ़िराक़⁵
इक दिल था वो भी उनको दिये जा रहा हूं मैं

¹अकेलेपन ²धोखा ³रास्ता ⁴कारवां के मुसाफ़िर ⁵विरह के ग़म के सिवाय